॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। तूने ऋषि-मुनियों का कल्याण किया है। विधाता! तू हमारा भी कल्याण कर। तू हमें भी यहाँ से ले चल, जहाँ एक-दूसरे की त्रुटि हो, एक-दूसरे पर क्रोध न्यौछावर किया जाता हो यह संसार मुझे नहीं चाहिए। मुझे तो वह कजली वन चाहिए जिस कजली वन में सिंह दहाड़ते हों। जहाँ हाथी ध्वनियाँ कर रहे हों। जहाँ विधाता! नाना सिंह ध्वनियाँ करते-करते उस अमूल्य आत्मा के द्वारा, वेदों का श्रवण करने वाले हों। आज के मानव से ये सिंह ऊँचे हैं जो ऋषि-मुनियों की वार्त्ता का पान करते हैं।

हे प्रभु! मेरा अङ्ग-प्रत्यंग, सर्वत्र इन्द्रियाँ यज्ञमय हों। मेरे जीवन का एक-एक सङ्कल्प यज्ञमय हो। आज मैं विकल्पों में नहीं जाना चाहता, जो जीवन को नष्ट कर दें। परन्तु प्रभु! मुझे अपने सङ्कल्पों को यज्ञमय बनाने के लिए सहायता की आवश्यकता है। जैसे यज्ञशाला को रचाने के लिए यजमान की आवश्यकता है। जैसे यज्ञशाला को रचाने के लिए यजमान को ब्रह्मा की आवश्यकता है। इसी प्रकार आज अपने जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए किसी की सहायता लेना चाहता हूँ। परन्तु मुझे कोई ऐसा प्रतीत नहीं देता जिसकी में सहायता लूँ, मुझे तो केवल प्रभु ही ऐसा प्रतीत देता है जिसका यह संसार यज्ञ है। मैं उस परमपिता परमात्मा को अपना स्वामी बनाना चाहता हूँ। मैं किंचित् बुद्धि वाला एक यजमान बनना चाहता हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 568 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 643
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द जी महाराज	5-18
4. आत्मा का प्रकाश	पूज्यपाद-गुरुदेव	19-35
5. ऋषियों के उद्‌गार		36
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		37-42

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व शृङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनाँक 1 मार्च, 2020 से 8 मार्च, 2020 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला

ओ३म् रेवम् भविताः। माम् रथम् मन्थाः यो सर्वे संजनाः
माम् रथम् विष्णुः रथम् आपाः यमाः।
यजनम् गतम् विवश्चम् आपाः रेवाः।।

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और वे यज्ञोमयी स्वरूप हैं। क्योंकि याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास कर रहा है। तो मुनिवरों! हमारे आचार्यों ने मन्थन करते हुए यह कहा है, क्या ये जो संसार है, यह परमपिता परमात्मा का अमूल्य जगत है और यह एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में परणित किया गया है। क्योंकि याग अपने में एक अद्वितीय क्रियाकलाप है, जिस क्रियाकलाप के लिए हमारे ऋषि मुनियों ने बेटा! प्रयास किया है अथवा अनुसन्धान किया है। क्योंकि अनुसन्धान करना ही हमारा कर्त्तव्य माना गया है। तो परमपिता परमात्मा, मानो ब्रह्माण्ड और पिण्ड की, दोनों की आभा में सदैव विद्यमान रहते हैं। तो इसीलिए उस परमपिता परमात्मा को हमारे यहाँ यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। क्योंकि जितना भी ये ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है, ये एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में विद्यमान है।

संसार एक यज्ञशाला

मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है एक समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से मानो ब्रह्मवेत्ताओं ने क्या ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया, हे ऋषिवर! प्रातःकाल का समय है और प्रातःकालीन आप विद्यालय को याग से सजातीय करते हैं। क्योंकि विद्याालय में जब प्रातःकालीन याग होता है, उसके पश्चात् आप और क्रियाकलापों में परणित होते हैं। हम ये जानना चाहते हैं, क्या ये जो ब्रह्माण्ड है, यह परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला कैसे है? क्योंकि वेद का मन्त्र कहता है यजनम् ब्रह्मणाः यजनम् ब्रव्हे कृतमः देवाः। तो मुनिवरों! देखो, जब ब्रह्मचारियों ने ये प्रश्न किया, उन्होंने कहा कि ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। **ये जो ब्रह्माण्ड है, ये अपने में ही अपने में गतिवान् हो रहा है और उस अपने में गतिवान् होने से ही मानो एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में ये परणित किया गया है।** जिस यज्ञशाला में हम सब प्राणी विद्यमान रहते हैं। मानो जिस यज्ञशाला का नाभि मानो यज्ञ ही नाभ्याम् कहलाता है। तो वेद का आचार्य ये प्रश्नों का, जिज्ञासाओं, जिज्ञासुओं को उत्तर देते हुए बोले, हे ब्रह्मचारियों! ये तुम जान गए होंगे कि यहाँ प्रत्येक स्वरूप में ब्रह्म ही दृष्टिपात आता है। मानो जैसे परमपिता परमात्मा ने इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया और इस यज्ञशाला में देखो आत्मा यजमान है, और परमपिता परमात्मा ब्रह्मत्त्व कहलाए गए हैं। वे ब्रह्मा हैं और देखो ये जो पञ्चहोताओं के द्वारा जो ये याग हो रहा है यह अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप है। मेरे प्यारे! देखो, **प्रत्येक अणु-परमाणु अपने में गतिवान् हो रहा है, एक दूसरे को प्रेरित कर रहा है तो वही एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में हमें दृष्टिपात आता रहता है।**

मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या यहाँ प्रत्येक स्वरूप में याग हो रहा है। मानो देखो इसमें ब्रह्मणा! देखो वह ब्रह्मणम् ब्रव्हे आत्मा! वह जो आत्मा अपना कल्याण चाहता है और आत्मा के आश्रित हो करके मुनिवरों! देखो एक याग हो रहा

है। जिस याग में हम सब विद्यमान रहते हैं। जिस याग की आभा में मानो देखो हम सब याज्ञिक बने हुए हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! हमारा वेद का मन्त्र ये कहता है यागाम् भवितम् यागाम् रूद्रो भव प्रमाणम् बव्हे, यागस्वतम् ब्रव्हे वृताः। ये मानो देखो एक याग है, इसमें बेटा! पञ्चमहाभूता, पञ्चमहाभूत, एक होता बन करके आहुति दे रहे हैं। बेटा! अग्नि गुरुवकृते, अग्नि तेज को दे रहा है, मानो उष्ण बना रहा है और जल मुनिवरों! देखो आपोमयी ज्योति बना हुआ है। इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में जब बेटा! हमारे यहाँ शिशु विद्यमान होता है तो मुनिवरों! देखो जल ही उसका आसन है, जल ही उसका बिछौना है, जल ही उसके पासे बने हुए हैं। इसीलिए यज्ञशाला में, यजमान जब अपने आसन पर विद्यमान होता है तो वह **तीन आचमन** करता है। तो तीन आचमनों का अभिप्राय यही है कि देखो वह उसका ओढ़न, उसका बिछौना, उसके पासे मानो देखो आपोमयी कहलाते हैं और उसी में वो शिशु रत्त रहता है। मेरे प्यारे! वहीं निर्माण होता रहता है। तो कैसा भव्य विज्ञान है। मेरे प्यारे! देखो अपने में ही अपनी आभा में वो रत्त होने जा रहा है।

आओ मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता रहता है सम्भवम् समलोकाम् समवृतिवृताः! हे ममत्व! को धारण करने वालों मानो यदि तुम इस यज्ञशाला की प्रतिक्रिया को जान लो तो एक आनन्दम् ब्रहे और जब मुनिवरों! देखो बाह्य जगत में यजमान प्रवेश होता है तो वह बेटा! देखो पूर्व दिशा से प्रकाश आता है। वह जल का प्रोक्षण करता रहता है और देखो अन्न का स्वामी जो है वह वरुण कहलाता है। बेटा! वो पश्चिम ब्रहा रूप में गत रहता है। सोमपान करने वाला, मेरे प्यारे! देखो ज्ञान का उपार्जन करने वाला वो मुनिवरों! देखो ऊर्ध्वा में गमन करता रहता है।

उत्तरायण

मुझे स्मरण आता रहता है, त्रेता के काल, मानो द्वापर के काल की चर्चाएँ स्मरण आती रहती हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह जब ब्रहे पितामह भीष्म

मृत्यु शय्या पर विद्यमान थे। तो मुनिवरों! देखो उन्होंने ये कहा था, क्या मैं जब तक अपने शरीर को नहीं त्यागूँगा, जब तक सूर्य उत्तरायण नहीं हो जाएगा। मुझे उत्तरायण होना चाहिए। तो बेटा! उत्तरायण के दो स्वरूप माने गए हैं। एक उत्तरायण मानो सूर्य कहलाता है जो मुनिवरों! देखो, एक वर्ष में मानो छः अपृतम, छः माह का देखो उत्तरायण होता है और छः माह का दक्षिणायन होता है। मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् एक तो ये इसका रूप बना। परन्तु द्वितीय रूप में ये माना गया क्या ज्ञान का नाम उत्तरायण होता है और अज्ञान का नाम दक्षिणायन कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह भीष्म ने, पितामह भीष्म ने ये विचारा क्या मैं उत्तरायण बन जाऊँगा। जब तक मेरा हृदय, मस्तिष्कः, मनः, प्राणः, विचार जब तक मुनिवरों! देखो उत्तरायण नहीं होंगे, तब तक मैं शरीर को नहीं त्यागूँगा। बेटा! उत्तरायण का अभिप्राय ये है ज्ञान, उत्तरायण का अभिप्राय ये विज्ञान में, ज्ञान में रत्त होना, उपराम (उपरान्त) परमपिता परमात्मा की महती को जानना, मेरे प्यारे! देखो उसे हमारे यहाँ उत्तरायण कहा जाता है। उत्तरायण का अभिप्राय ये, उत्तरो भवितम् ब्रह्मे उत्तराणम् ब्रव्हे कृतम्। तो **उत्तरायण बेटा! देखो ज्ञान को कहते हैं।** इसी प्रकार याज्ञिक जो पुरुष होते हैं वे उत्तरायण को प्राप्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो याग करने वाला, जब इस आध्यात्मिक याग को जान लेता है क्या परमात्मा मेरे अन्तर्हृदय रूपी यज्ञशाला में विद्यमान है और मानो देखो वही वृत्तम है। देखो, जहाँ इस प्रकार की प्रतिभा विद्यमान रहती है, बेटा! वही उत्तरायण कहलाता है और आत्मा यजमान बन करके वह भी उत्तरायण में है और होताजनों से जब देखो पृथ्वी आपोः अग्निः और मुनिवरों! देखो गति और अन्तरिक्ष मुनिवरों! पञ्चमाभूत हैं जिनके द्वारा याग हो रहा है। जो याग में परणित हो रहे हैं। तो मेरे पुत्रों! वह जो याग है वो उत्तरायण कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूँगा। विचार विनिमय ये कि **जितने महापुरुष हैं वह अपने में चिन्तन करते हैं और मनन करते हैं।** जब तक अपने जीवन को उत्तरायण में नहीं ले जाते, तब

तक मुनिवरों! देखो! उनका अपने में, अपने में ही वृत्तियों को नहीं प्राप्त हो पाते, वे तब तक अपने शरीर को नहीं त्याग पाते। शरीर को त्यागना ही बेटा! ज्ञान है, उसको जान करके त्यागने का नाम ज्ञान है। अन्यथा शरीराणाम् भोक्तम् ब्रव्हे, शरीर तो त्यागा ही जाएगा, जो निर्माण हुआ है। परन्तु उत्तरायण हो जाए तो देखो वह आनन्द का गामी बन जाता है।

याग के नाना स्वरूप

विचार-विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए, परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत में प्रवेश होते हुए, बेटा! अपने को जानने का प्रयास करें। तो मेरे प्यारे! वह परमपिता परमात्मा की ये यज्ञशाला है और मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला ही संसार की नाभि कहलाती है। और वह जो नाभि है उसी से बेटा! केन्द्र चलता है। जितना भी संसार का शुभ क्रियाकलाप है, सुकर्म है, सुवृत्तियाँ हैं, वह सर्वत्र मेरे प्यारे! देखो याग माना गया है ।

मेरे प्यारी माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु पनप रहे हैं। परन्तु देखो अपने बाल्य को शिक्षा दे रही है। ओजस्वी बना रही है। **परमाणुवाद में रत्त हो करके आत्मा से चर्चा करती है।** बेटा! वह बाल्य का पालन करते हुए पुत्रयाग कर रही है। हे माता! तुझे वेद ने सुनीता कहा है, तू सुमति के देने वाली है! इसीलिए वेद सुनीता कहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो विचार आता रहता है हम अपने याग में परणित हो जाएँ। मेरे पुत्रों! देखो, याग के सम्बन्ध में आचार्यों ने बेटा! बड़ी विचित्र-विचित्र उड़ाने उड़ी हैं। बड़ा विचित्र अपना मन्तव्य प्रगट किया है। उन्होंने कहा याग ही राष्ट्र है। मेरे प्यारे! देखो जो राजा प्रातःकाल में याग करता है, अपनी क्रियाओं से निवृत होता है जिसके हम ऋणी हैं। तो मुनिवरों! देखो, वह राजा अपने राष्ट्र को उन्नत करता रहता है। और जो माता-पिता प्रातकालीन ब्रह्म का चिन्तन करते रहते हैं उनके गृह में रहने वाले जो बाल्य बालिका हैं वे पवित्रतम् बन जाते हैं। वे गृहपत्य अग्नि की पूजा करते रहते हैं।

आओ मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र हमें क्या कह रहा है। यजनम् यजन्नम ब्रह्मा कृतम्, देवत्वाम् योगम् ब्रह्मा लोकाम्। मेरे प्यारे! देखो एक योगेश्वर अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करता हुआ, मेरे प्यारे! देखो वह प्राणों का याग कर रहा है। प्राणों से हुत कर रहा है। मुनिवरों! देखो, हुत करता हुआ वह प्राणों के द्वारा अपने मन को महान् बना लेता है। और वह क्रियात्मक, अपने क्रियाओं में रत्त हो करके अपनी आभा में परणित हो जाता है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ। केवल उच्चारण करना ही हमारा ये कि हम, परमपिता परमात्मा का जो अनुपम जगत है जिसमें बेटा! देखो भाँति-भाँति के लोक-लोकान्तर अपने में एक माला के सदृश परणित रहते हैं। जैसे मेरे प्यारे! देखो ये पृथ्वी हम सबकी माला बनाए रहती है, अपने में धारण कर रही है और जब पृथ्वी की माला बनती है, तो मेरे प्यारे! देखो उस माला को धारण करने वाला सूर्यवत् कहलाता है। सूर्य इस पृथ्वी को अपने में धारण कर रहा है और धारण करता हुआ, ये नाना प्रकार के व्यंजनों वाली कहलाती है। तो आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा की महती का हम सदैव, गुणगान गाते हुए अपने में महान् याग की कल्पना करते हुए—हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। यागाम् ब्रह्मणे वृत्तम्, देवस्सतम् ब्रह्मा वायु सम्भवाः।

मेरे प्यारे! देखो हम यज्ञम् ब्रहे, हे यजमान! तू यज्ञशाला में विद्यमान हो करके जब हुत करता है, अग्नि को देवताओं का मुख बना करके और उसमें हुत करता रहता है तो वो तेरी महानता की प्रवृत्ति है। मानो देखो हमारे ऋषि मुनियों ने तो इसके ऊपर बेटा! बड़ा अनुसन्धान किया। याज्ञवेत्ताओं ने, निर्णय करने वालों ने ये कहा है, क्या ये जो याग है, यही तो अमृत है। यही तो सोम कहलाता है और यही मुनिवरों! देखो, देवताओं की धुरी कहलाता है। जो अग्नि जिनको विभाजन कर देती है और विभक्त करके उसे अग्नि अपने में धारण करती रहती है।

आओ मेरे प्यारे! मैं आज विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूँगा क्योंकि हमारा मानव शरीर भी एक प्रकार की मानो आन्तरिक यज्ञशाला है। इसमें प्रत्येक इन्द्रियों का साकल्य बना करके योगीजन याग करता है। तो याज्ञिक बनकर के ही राष्ट्र को उन्नत बनाया जाता है। आज बेटा! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, विचार-विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है, उसकी महती का गुणगान गाते रहें। उसकी महिमा, उसका जो ज्ञान है, उसका बखान करते रहें। मुनिवरों! देखो, वही तो हमारे लिए मानो सतोमयी रमण करता है, हमारी पालना कर रहा है। अब मैं विशेष चर्चा नहीं, केवल महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् देवाः यजन्नम! प्रव्हाः वर्णश्चमम्! ब्रह्मणाः वायु रथम् अग्नम् दिव्याः!

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्रऋषि समाज, भद्र पुरुषों। अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव परमपिता परमात्मा के रचाए हुए ब्रह्माण्ड को वे एक याग की संज्ञा दे रहे थे। क्योंकि ये संसार को एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में वर्णित कर रहे थे। मानो देखो आज का हमारा ये जो वाक्य है, हमारी जो आकाशवाणी है, वह मृतमण्डल में प्रवेश हो रही है। और जिस स्थली पर हमारी ये वाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ और मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा था क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव तो बहुत गम्भीर मुद्रा में ले जाते हैं। मानो वह तो परमात्मा के रचाए हुए ब्रह्माण्ड पर ले जाते हैं और वहाँ जा करके नृत्य करने लगते हैं यौगिकता का। तो याग के ऊपर इनका विचार बड़ा अनुपम रहा है। क्योंकि मुझे बहुत सा काल इनका स्मरण आता रहता है। मुझे स्मरण है, यहाँ देखो नाना राजाओं के यहाँ याग जैसे राष्ट्रम् ब्रहे, जैसे पुत्रेष्टि याग हुआ था राजा दशरथ के यहाँ। उस पुत्रेष्टि याग में मानो देखो, उस अयोध्या को उन्नत बनाने के लिए राम जैसे महापुरुषों का जन्म हुआ। तो मेरा जो अन्तरात्मा है वो यजमान के साथ रहता है। मैं मानो परम्परागतों से उद्‌गीत गाता रहता

हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव के सम्बन्ध में, क्या इनके विचार बड़े गम्भीर और मार्मिक होते रहते हैं और यौगिकता में हमें ले जाते हैं। तो मानो देखो आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मानो गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। इस ब्रह्माण्ड को, याग को ब्रह्माण्ड में और ब्रह्माण्ड को याग में परणित कर रहे थे। आध्यात्मिक याग और भौतिक विज्ञान दोनों का एक समन्वय कर रहे थे। परन्तु मुझे इन विचारों में नहीं जाना।

यजमान को शुभकामनाएँ

मेरा तो एक ही उद्देश्य रहता है, क्या मेरा जो अन्तरात्मा वो यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो मेरी ये सदैव कामना रहती है क्या यजमान जो अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करता है और वो देवताओं को अपनी हुत करता रहता है, देवता उससे प्रसन्न होते हैं। और अग्नि के मुखारबिन्दु में जो परमाणु जाता है, जो साकल्य जाता है उसका विभाजन हो जाता है। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! हे वृन्नम् ब्रव्हा कृतम, मानो देखो मैं अपने यजमान के लिए अपनी शुभकामना प्रगट करने चला आता हूँ।

द्रव्य एक ममता

ये जो काल चल रहा है ये मैंने बहुत पुरातन काल में आपको निर्णय कराया ये सुरा, सुन्दरी और द्रव्य का काल चल रहा है। इस काल को मैं वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ। मैं यह कहता रहता हूँ, हे यजमान! तेरे जीवन की आभा सदैव बनी रहे। क्योंकि ये जो काल है, ये वाममार्ग का काल है। जहाँ देखो द्रव्य को, द्रव्य का दुरुपयोग किया जा रहा है। सुरा और सुन्दरी में मानव मग्न रहता है। तो इसीलिए मैं ये कहता हूँ कि राष्ट्रम्, ये मैं जो आधुनिक राष्ट्र की प्रतिक्रियाएँ चल रही हैं, इसको भी मैं वाममार्ग की काल कहता रहता हूँ। क्योंकि वाममार्ग इसीलिए कहता हूँ क्योंकि राष्ट्र, सुरा और सुन्दरी के अभोवृतियों में लगा हुआ है। द्रव्य में एकत्रित क्योंकि

देखो कर्तव्य का पालन नहीं हो रहा है। द्रव्य एकत्रित करना कोई पाप नहीं है परन्तु यदि वो सत्कामना से एकत्रित हो तो, बहुत प्रिय है। और जब वो मानो देखो द्रव्य अनावृतियों में आता है उसका विनाश होता रहता है। उसका दुरूपयोग होता रहता है। तो दुरूपयोग नहीं होना चाहिए। यदि द्रव्य का सदुपयोग हुआ, ये द्रव्य ममता है, **ये द्रव्य मानव को धर्म के मूल पर ले जाती है।**

एक समय ऋषि से एक ने ये प्रश्न किया क्या देखो धर्म का मूल क्या है? उन्होंने कहा कि धर्म का मूल्य देखो द्रव्य है। और द्रव्य का मूल्य क्या है? वो मानो देखो अपनी क्रिया शक्ति है और क्रिया का मूल क्या है? जो मानव को देखो मोक्ष की पगडण्डी पर लगा देता है। विचार आता है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में प्रगट कराया। परन्तु आज तो मैं उस आभा में नहीं, केवल ये कि द्रव्य एक ममता है, द्रव्य माया एक ममता है। यदि ममता के मानो ममता का, इस माया का, माता का दुरूपयोग करता है, तो एक समय वो आता है कि माता उसे त्याग देती है। मानो देखो त्याग करके वह, वह धूर्त बन जाता है। मानो वो धूर्त की प्रवृति में हो जाता है, पामर कहलाता है। जब देखो माँ, माँ ही जिसको त्याग देती है वो पुत्र नहीं रहता।

राष्ट्रवाद

इसीलिए हे पूज्यपाद! देखो मैं यह कहता रहता हूँ क्या इसके लिए राष्ट्रवाद ऊँचा होना चाहिए। जब राजा के राष्ट्र में देखो अनर्थ होने लगता है, उस समय राजा के, राजा को ये ममता द्रव्य, द्रव्य त्याग देता है। राज्य त्याग देता है और वह मानो देखो, उसी आभा में परणित हो जाता है। हे मेरे पूज्यवाद गुरुदेव! आधुनिक काल में मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ये जो समाज है, मानो ये जो राष्ट्रवाद है इस राष्ट्रवाद में परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तियाँ क्रियाएँ होती रहती हैं और ये राष्ट्रवाद अग्नि के मुखारबिन्दु में मुझे प्रतीत हो ही रहा है। क्योंकि हे पूज्यपाद गुरुदेव! आप भी ये कहा करते हैं, जब समाज में विज्ञान का दुरूपयोग होने लगता है, और देखो

नरसंहार होने लगता है, वो कोई राष्ट्र नहीं होता है। वो कोई राज्यसभा नहीं होती है। परन्तु देखो, राज्यसभा वह होती है, जहाँ विचार होते हैं। और जहाँ दुरिता होती है, वाणी का भी दुरूपयोग होता हो, वो भी राज्यसभा नहीं होती। राज्यसभाएँ वह होती हैं जहाँ एक दूसरा मानव विचार-विनिमय करने के लिए तत्पर होता है और वो विचार करता है। और उसी विचार को वो मानवता से मानो निर्धारित करने लगता है। तो इसीलिए विचार आता है क्या, राष्ट्रवाद की प्रतिक्रिया ऊर्ध्वा में गमन होनी चाहिए।

भगवान् राम का तप के लिए गमन

एक समय देखो, भगवान् राम की चर्चाएँ मुझे स्मरण आती रहती हैं। भगवान् राम ने, एक समय देखो सब, देखो वृति देखो महापुरुषों को एकत्रित करते हुए, उन्होंने कहा, हे महापुरुषों! देखो राष्ट्र के लिए तुम उद्गीत गाओ। राष्ट्र कैसे उन्नत होता है? तो उस समय महात्मा वशिष्ठ ने कहा–वे पूज्यपाद थे, राष्ट्र पुरोहित भी थे। उन्होंने कहा कि **राष्ट्र जब उन्नत बनता है जब राजा तपस्वी होता है।** मुनिवरों! देखो जब ये मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भी वर्णन कराया था। राम कैसे सखा थे राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए। देखो जब लङ्का को विजय करके, वे देखो अयोध्या में आए, तो उस समय महाराजा भरत ने कहा कि आओ भगवन्, आप अपनी स्थली को, राजस्थली पर विराजमान हो जाओ। उन्होंने कहा, मैं नहीं, अभी नहीं, मैं जब तक ऋषि मुनियों की आज्ञा, विचारकों की आज्ञा नहीं ले पाऊँगा जब तक मैं इस स्थली पर विद्यमान नहीं हो सकूँगा। क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि मैं राजस्थली पर विद्यमान हो जाऊँ। जब देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, मुझे कई काल में वर्णन कराया इस सम्बन्ध में। क्या राम ने वशिष्ठ, विश्वामित्र और भी नाना देखो, ऋषि, महर्षियों को एकत्रित किया और उन्होंने कहा, ब्रह्मे, हे प्रभु! मैं क्या करूँ? उन्होने देखो, अमृतम् वशिष्ठ ने कहा था, तपश्चम् ब्रह्मा, जाओ तुम तपस्वी बनो। जब देखो ऐसा कहा तो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया क्या, राम बारह वर्ष के लिए भयङ्कर

वन में चले गए और सीता अपने आसन पर तपस्या में तल्लीन हो गयीं। देखो उन्होने ये कहा था, जब तपस्या के लिए जाने लगे तो महर्षि विश्वामित्र ने कहा तुम तपस्या के लिए क्यों जा रहे हो? उन्होंने कहा, मैं अभी लङ्का को विजय करके आया हूँ और लङ्का में जो मैंने, मानो जो संग्राम किया है, कहीं मेरे विचार रजोगुणी रहे हैं, कहीं तमोगुणी बने हैं और कहीं प्राणी को, देखो नष्ट करने में लगे रहे हैं, एक दूसरे के। तो मेरा देखो, जब तक उपसंहार नहीं होगा या मैं उनसे प्रायश्चित नहीं करूँगा, तब तक मैं राज्यस्थली पर विद्यमान नहीं होऊँगा। क्योंकि **राज्यस्थली पर जब विद्यमान होता है तो वो परमपिता परमात्मा तुल्य आसन होता है और उसमें देखो न्यायकर्ता की सात्विक प्रवृत्ति होती है।** और मेरी यदि सात्विक प्रवृत्ति नहीं है तो मैं राजस्थली का भी अधिकारी नहीं हूँ। देखो, जब राम ने यह कहा तो राम के उन विचारों को श्रवण किया और आधुनिक काल का जो राजा है वो कैसा है प्रभु! वह ऐसा है, क्या वह रजोगुणी विचार हैं, तमोगुणी विचार हैं, सुन्दरियों में संलग्न है, सुरा का पान कर रहा है परन्तु मुझे राज्यस्थली प्राप्त हो जाए। मुझे और संसार में कुछ नहीं चाहिए। मैं राजा बन जाऊँ। राज्य के योग्य है अथवा नहीं ये देखो वो नहीं जानता है। परन्तु देखो राम, ऐसे वो राम थे, जो भयङ्कर वनों में बारह वर्ष के लिए, तप के लिए चले गए। और भरत, देखो राष्ट्र को नहीं भोग रहा है। वो नीचे गुफा में रहता है। क्या मेरे विधाता का आसन पृथ्वी पर है तो मैं गुफा में चला जाऊँ? ये हमारी मात्र, मानो देखो, भातृ भक्ति होती है जिसके ऊपर मानव विचारता रहता है। परन्तु आधुनिक काल में जैसे भ्राता नष्ट हो जाए और मुझे राज्यस्थली प्राप्त हो जाए। आधुनिक काल में, वर्तमान में कितना अन्तर्द्वन्द्व माना गया है।

यजमान को प्रेरणा

विचारा जाता है जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यागों की चर्चा करते हैं तो हमारा अन्तरात्मा ये स्वीकार कर लेता है कि हम जैसे स्वर्ग में, आनन्द में विद्यमान हैं। आनन्द को प्राप्त कर रहे हों और ब्रह्मज्ञान में परणित हों।

तो इस प्रकार देखो मैं विशेषता तो देने नहीं आया हूँ। मैं तो ये उच्चारण करने के लिए आया हूँ हे यजमान! तेरे हृदय में मानो देखो द्रव्य के सदुपयोग की कामना बनी रहे और द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। और वह अग्न्याधान करते हुए देखो, अग्नि के मुखारबिन्दु को वह उसमें साकल्य प्रदान करता रहे जिससे गृह उत्तम बन जाए, महान् बन जाए और पवित्रता की वेदी पर रत्त हो जाए। मैं यह उच्चारण करता रहता हूँ, हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरा जीवन तपस्या में परणित होना चाहिए। देखो नाना प्रकार के अपने विचारों को और आहारों को पवित्र बनाना चाहिए। जब तक मानो आहार पवित्र नहीं होगा तो व्यवहार पवित्र नहीं होगा और व्यवहार पवित्र नहीं होगा तो मन पवित्र नहीं होगा। और मन पवित्र नहीं होगा तो देखो तुम्हारा विचार पवित्र नहीं होगा। और जब विचार पवित्र नहीं होगा तो इन्द्रियाँ भी पवित्र नहीं बन पाएँगी। तो ऐसा मानो देखो, मेरा सदैव एक मन्तव्य रहता है, विचार रहता है कि आहार-व्यवहार दोनों पवित्रता में रत्त रहने चाहिए। हे यजमान! मेरे देखो, मेरा तो एक ही उद्देश्य रहता है क्या तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। महानता में परणित होते चले जाओ ऐसी मेरी कामना रहती है। और द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए।

भगवान् राम का तप

अब मैं, वर्णम् ब्रव्हे, देखो मैं राम की गाथा उच्चारण कर रहा था। **बारह वर्षों तक वो इन्द्रियों के ऊपर संयम करते रहे और गायत्राणी छन्दों में।** और वो आहार क्या करते थे, ये विचार का विषय है। देखो, राम को देखो, एक देखो एक दिवस देखो, वायु का आहार करते थे शीतली प्राणायाम के द्वारा। और एक दिवस देखो वो अन्नाद को पान करते थे। इसी प्रकार बारह वर्षों का तप करके जब मन पवित्र हो गया, इन्द्रियाँ पवित्र हो गयीं, सतोगुणी विचार बन गए तो इसके पश्चात् उन्होंने अयोध्या की राज्यस्थली को अपनाया। देखो, उसके पालन करने के लिए

तत्पर हो गए। क्योंकि राष्ट्र कोई आवश्यक नहीं है। जब तक मानव के हृदय में मानव का अन्तरात्मा पवित्र न हो, जब तक मानव की इन्द्रियाँ संयमी न हों और देखो यदि हम ये उच्चारण करने लगें कि महाराजा अश्व केतक–देखो राम भी स्वयँ कला-कौशल, राम भी स्वयँ देखो अपने में कृषि उद्गम करते थे और वह उसको पान करते थे। मानो देखो उस अन्नाद को पान करके हृदय को ऊँचा बनाया जाता है।

द्रव्य का सदुपयोग करें

आज का राष्ट्र ये विचार रहा है क्या प्रजा के वैभव को संग्रह करता हुआ मैं राष्ट्र को उन्नत बना लूँ, ये असम्भव है। देखो, राष्ट्र जब ऊँचा होता है, जब राजा स्वयँ अपने में कृषि उद्गम करके अन्न को पान करता है और वह राजा देखो प्रजा के वैभव को अपने में संग्रह नहीं करता है। वह देखो, वह अपने में महान् बन करके अपनी अन्तरात्मा को उज्ज्वल बनाता है। बहुत राजाओं का जीवन मुझे स्मरण आता रहता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अब आज्ञा पाऊँगा क्योंकि विशेषता में मैं नहीं जाऊँगा। विचार केवल ये कि देखो हमारा वाक्य ये कह रहा है, हे यज्ञम् भूतम् प्रमाणम् ब्रव्हे, यज्ञम् ब्रहे। प्रत्येक मानव को अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करना चाहिए। द्रव्य को देखो, सुरा, सुरा में नहीं ज्ञातम् ब्रव्हे नष्ट करना चाहिए। देखो वह सुरा को अपने में, अपने द्रव्य को एकत्रित करके उसका सदुपयोग करे, यही उसकी महानता है। हे यजमान! तेरे जीवन की प्रतिभा ऊर्ध्वा में गमन करती रहे। ये मेरा देखो आज का उपदेश, सम्ब्राहा, ये आज का हमारा वाक्य है। समय मिलेगा तो पूज्यपाद-गुरुदेव समय देते रहते हैं। आज के विचार को अब हम विराम दे रहे हैं। अब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव!

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अपना बड़ा भव्य विचार दिया। और तपस्या के सम्बन्ध में जो इनका विचार रहा है, वह

बड़ा अनुपम रहा है। मानो देखो, **आज का हमारा विचार क्या** हम परमपिता परमात्मा के, मानो उस यज्ञशाला का वर्णन कर रहे थे, जिस यज्ञशाला में हम सब विद्यमान हैं सुकर्म करने के लिए, विचारवान बनने के लिए, वेद का पठन-पाठन करने के लिए। और देखो, वह जो परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी विद्यमान है, यह ब्रह्माण्ड यज्ञशाला है, इसके ऊपर विचार करना चाहिए। हम उस परमपिता परमात्मा की महत्ती का गुणगान गाते रहें जो आनन्दमयी स्त्रोत है। ये है बेटा! आज का वाक्। समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मा वाचन्न आपाः।
ओ३म् दधि ब्रह्मणश्चम् आपाः।

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्।
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो।

दिनाँक : 6 जनवरी, 1990
समय : दोपहर 11.30 बजे
स्थान : श्री शिवकुमार त्यागी
ग्राम धनौरा, हापुड़

सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट 26-9-2914 को मिल गई है जो कि 2015-2016 से लागू है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

आत्मा का प्रकाश

ओ३म् आभ्याम् लोकाः। यम सर्वा रथहम् आभ्याम् गताः।
यशश्चम् विश्वे संगजनाः आपा रथम् मयाः।
विश्वाहम् नमत्वाम् देवाऽहम् आत्मा गतम् भवितम् देवम् रथः।

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस परम मङ्गलम् ब्रहे सञ्जनम् जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और वे यज्ञोमयी स्वरूप हैं और वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी और विज्ञानमयी हैं। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं। और वे सीमा में आने वाले नहीं हैं। वे अनन्तमयी हैं। मानो उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर जब ऋषि-मुनि बेटा! अन्वेषण करते रहे। मानो उसकी अनन्तता में और उसकी महानता का जब अपने में धारयामी बने तो उसमें अनन्तता ही दृष्टिपात आती गयी है। अन्तिम बेटा! चरण ये होता है कि मानव की वाणी और इन्द्रियाँ सब मौन हो जाती हैं, उसका बखान करते-करते बहुत दूरी चले जाते हैं। परन्तु अन्त में मौन हो जाते हैं और अनन्तमयी कह करके बेटा! वो शान्त मुद्रा में मुद्रित हो जाते हैं।

वेद मन्त्र प्रेरणा का स्रोत

आओ मुनिवरों! आज हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते चले जाएँ। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सृष्टि के रचयिता हैं और उग्रवाद है। मानो परमपिता परमात्मा ने उग्रवाद को उत्पन्न करते हुए और उग्रवाद को उसे मानो समर्पित कर दिया है। और ये संसार मानो उग्र रूप में ही अपने जीवन को सम्पन्न और समृद्धियों में करता रहा है। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में नहीं ले जाऊँगा। क्योंकि वेद मन्त्र तो इस प्रकार की उड़ानें उड़ता ही रहता है। क्योंकि संसार में जितना भी उत्पत्ति का जो मूल है उस मूल में उग्रवाद है और सृष्टि के रचने में भी उग्रवाद ही प्रतीत होता है। मेरे पुत्रों! उग्रवाद में उग्रवाद को ही समर्पित करते हुए और उसी में मुनिवरों! देखो निर्माण की प्रतिभा निहित रहती है। तो आओ मुनिवरों! देखो, इस वेद मन्त्र में हम क्या उद्‌गीत गाना चाहते हैं। वेद मन्त्र ये कहता है कि परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और उसकी अनन्तता एक-एक वेद मन्त्र में बेटा! दृष्टिपात आती रहती है। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष विवेचना नहीं देना चाहता हूँ। विचार ये कि हमारा वेद मन्त्र क्या कहता है, हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे करके प्रेरित कर रहा है। और प्रेरणा को पा-पा करके हम अपने में अपनेपन का भान करते रहते हैं।

आओ मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें ऐसी स्थली पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ मुनिवरों! देखो यजमान अपनी यज्ञशाला में याग करता रहा है। और वह अपने आचार्यों से प्रश्न और अपनी जिज्ञासा को पूर्ण करता रहा है। मैंने ये वाक्य तुम्हें कई काल में प्रगट कराते हुए भी कहा था। आज भी मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण आ रहा है। नाना प्रकार की वार्त्ताएँ प्रगट करते रहते हैं। विज्ञान अपनी आभा में गमन करता रहता है और मानव भी अपनी दार्शनिक आभा में रमण करता रहता है। और परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को वो दृष्टिपात करता रहता है।

राजा जनक और महारानी रम्भेश्वरी की आत्म चर्चाएँ

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक ऐसे आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ मुनिवरों! देखो बड़ी ऊर्ध्वा में अपनी उड़ाने उड़ी जाती हैं। मेरे पुत्रों! देखो, एक समय महर्षि अर्धभाग, राजा जनक के यहाँ पहुँचे और मुनिवरों! देखो, उनकी पत्नी रम्भेश्वरी अपने आसन पर विद्यमान थीं। सायँकाल का समय था। महर्षि अर्धभाग और रम्भेश्वरी दोनों बेटा! अपने में परस्पर न्योदा में मन्त्रों का अध्ययन करने लगे। परन्तु अध्ययन करते-करते देवी निन्द्रित हो गयीं। और महर्षि अर्धभाग मानो स्वरों में गान गाता ही रहा। मेरे पुत्रों! वह निन्द्रित होकर, निन्द्रा की गोद में चली गयीं। महात्मा अर्धभाग भी बेटा! अपने आश्रम चले गए। परन्तु देखो, जब मध्य रात्रि हुई, तो मध्य रात्रि में बेटा! वो वेद मन्त्र पुनः स्मरण आये और महारानी रम्भेश्वरी बेटा! अपने में न्योदा में मन्त्र उद्गीत गाने लगीं। और वेद मन्त्र ये कह रहा था प्रकाशम् भवितम् ब्रह्मणा वृतम् देवाः। वेद की आख्यायिका उन्हें स्मरण आयी। और वेद मन्त्र ये कह रहा था कि प्रकाशम् भवे, हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। कौन प्रकाश का द्युतक है। कौन प्रकाश दे रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, ये विचार उन्हें जब स्मरण आया तो विचार कर रही हैं परन्तु अपने में निबटारा नहीं हो रहा है।

वे रात्रि के अन्तिम चरण में राजा जनक के कक्ष में पहुँची। मेरे प्यारे! उन्होंने राजा जनक को जागरूक किया। राजा जनक बोले देवी, तुम रात्रि के अन्तिम चरण में मेरे कक्ष में आने का कारण क्या है? रम्भेश्वरी बोली कि प्रभु, कुछ वेद मन्त्र स्मरण आ रहे हैं और उस मानो वेद मन्त्रों में, मैं अपने में निबटारा नहीं कर रही हूँ। राजा जनक ने कहा, देवी! कौन से वेद मन्त्र हैं? उन्होंने कहा, न्योदा में वेद मन्त्रों का मैं अध्ययन कर रही थी और मन्त्र में आ रहा था कि प्रकाशम् भवितम् ब्रह्मेः वर्णस्सुतम् ब्रहा। मानो देखो, कौन प्रकाश के देने वाला है। कौन

प्रकाश दे रहा है और प्रकाश का वास्तविक द्युतक कौन है। मेरे प्यारे! देखो, दोनों इस विचार-विनिमय, मानो अपनी निद्रा को त्याग करके विचार-विनिमय प्रहा अकृत करने लगे। मेरे पुत्रों! देखो, रात्रि का अन्तिम चरण समाप्त हो गया परन्तु दोनों अपने में निबटारा नहीं कर सके। जब निबटारा नहीं कर सके कि कौन प्रकाश का द्युतक है। मेरे प्यारे! देखो अपनी क्रिया, अपने आसनों को त्याग दिया। और अपनी क्रियाओं से निवृत्त होके, क्योंकि राजा जनक के यहाँ, जहाँ बेटा! ये ब्रह्मयाग होता रहता था। मैं ब्रह्म की चर्चा कर रहा था। दोनों देखो, दिव्या और राजा दोनों अपने में आत्म चर्चा करते हुए, बेटा! अपने में निबटारा जब नहीं हुआ, तो क्रियाओं से निवृत्त हो करके, वे मेरे प्यारे! उनके यहाँ यज्ञशाला का निर्माण था।

राजा जनक की यज्ञशाला में यागक्रम

जब उस यज्ञशाला में पहुँचे, जहाँ नाना ऋषिवर विद्यमान थे। मेरे प्यारे! कुछ ब्रह्मवर्चोसी, कुछ ब्रह्मचारी, कुछ ब्रह्मवेत्ता और कुछ ब्रह्मनिष्ठ। मेरे पुत्रों! देखो, अपने-अपने आसन पर विद्यमान थे। राजा जनक ने बेटा! देखो, सम्ब्रव्हे, सबसे ऊर्ध्वा आसन पर महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विद्यमान थे। मेरे पुत्रों! देखो, दोनों ने अन्तः अपनी न्योदा में मन्त्रों को स्मरण करते हुए और राजा जनक और रम्भेश्वरी ने बेटा! यज्ञशाला में अग्निहोत्र किया। और अग्निहोत्र करने के पश्चात् मेरे प्यारे! अग्नि प्रदीप्त समिधा अग्रहे, नाना प्रकार के साकल्य के द्वारा उन्होंने याग किया। याग करने के पश्चात्, राजा ने, उनकी पत्नी ने ये निश्चय किया कि हम आचार्य से कोई प्रश्न नहीं करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, जब उनका याग सम्पन्न हो गया तो पुरोहित, यज्ञशाला में अश्वग्नि विद्यमान थे, महात्मा अर्धभाग थे, महात्मा दिग्ध और भी नाना ऋषिवर विद्यमान थे। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि राजन्, यजमान मेरे से कोई प्रश्न कर सकता है। मेरे प्यारे! दोनों बड़े प्रसन्न हुए।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से राजा और रानी द्वारा जिज्ञासा

राजा जनक और उनकी पत्नी ने नतमस्तक हो करके आचार्य से कहा, हे प्रभु! हम प्रश्न तो करने तो सुयोग्य नहीं हैं आपसे, परन्तु हमारी एक जिज्ञासा जागरूक हो रही है। हमारी जिज्ञासा को पूर्ण कीजिये। उन्होंने कहा, उद्गीत गाइये राजन्। उन्होंने कहा, क्या हे प्रभु हम रात्रि समय, न्योदा में कुछ मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे और ये विचार में आया कि प्रकाशम् भविते ब्रह्मणा वृतम्, वर्णस्सुते प्रकाशाम् भविते। हे प्रभु! वेद मन्त्र ये कह रहा है, क्या हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये प्रकाश का द्युतक कौन है? मेरे पुत्रों! देखो, अमृतम् ब्रह्मा। जब ऋषि से ये कहा गया तो ऋषि ने कहा, राजन् विराजो। देवी और राजा दोनों विद्यमान हो गए।

सूर्य प्रकाश का द्युतक है

उन्होंने कहा, हे राजन्, हमारे जो नेत्र हैं, सूर्याम् भवेतम् ब्रह्मा सूर्य प्रकाशाम् भविते वृताः। हे प्रभु! वेद मन्त्र तो ये कहता है कि हमारे जो नेत्र हैं वो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। सूर्य हमारे प्रकाश का द्युतक है। और ये सूर्य मानो देखो अपने में प्रकाश देता है। नाना प्रकार की ऊर्जा देता है। प्रकाश में हम प्रकाशित हो जाते हैं और उसी प्रकाश को पान करते हुए हम स्वतः अपने में मानो देखो प्रकाश को प्राप्त कर लेते हैं। प्रातःकाल होता है मेरी प्यारी माता अपने पुत्रों को जागरूक कर देती हैं, हे पुत्र जागरूक हो जाओ। देखो ये सूर्य उदय हो गया है। भानु आ गया है। अदिति आ गया है। तुम जागरूक हो जाओ, अपने क्रियाकलाप में परणित हो जाओ। मेरे पुत्रों! देखो यही तो प्रकाश है जो नाना प्रकार की वनस्पतियों को तपायमान करता रहता है। यही प्रकाश है जो सूर्य का प्रकाश जो मानो पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के खाद्य-खनिज को तपायमान कर देता है। नाना प्रकार के धातु को वो तपाता रहता है वो सूर्य अदिति कहलाता है। यही हमारे नेत्रों

का प्रकाश है और उसी के प्रकाश में, प्रकाश को ही दिवस कहते हैं। और वह दिवस होते ही मुनिवरों! देखो प्रकाशमान होने वाला जो प्रकाश देता रहता है, मानो उसी के प्रकाश में हम प्रकाशमान रहते हैं। तो **सूर्य हमारे नेत्रों का देवता है।** मानो देखो, ये अमृत के देने वाला है।

जैसे गौ नाम का पशु है। गौ नाम के पशु के रीढ़ के विभाग में एक मानो देखो स्वर्णकेतु नाम की नाड़ी होती है। जैसे सूर्य उदय हुआ, उसी समय देखो उस नाड़ी का ऊर्ध्वामुख हो जाता है और ऊर्ध्वामुख होते ही उस परमाणुओं को अपने में सिञ्चन करने लगता है। जिन प्रमाणम् ब्रहे देखो जिनमें स्वर्णम् ब्रहा, मेरे प्यारे! देखो गऊ के यन्त्रालयों में वो परमाणु प्रवेश हो जाते हैं और स्वर्णमयी मानो इसीलिए गऊ के घृत और दुग्ध में पीतवर्ण होता है। क्योंकि उसमें स्वर्ण की मात्रा विशेष मानी गयी है। तो अमृते ब्रह्मा।

ऋषि ने कहा, हे राजन्! ये सूर्य हमारे नेत्रों का देवता है, इसको अदिति कहते हैं। इसको मानो ऊदेन कहते हैं, इसी को भास्कर कहते हैं। इसी को विष्णु कहते हैं। इसी को मानम् ब्रव्हे, मेरे प्यारे! इसी को सूर्या स्वस्त कहते हैं। ये नाना प्रकार से इसका वर्णन किया जाता है। ये मानो द्यौ से प्रकाश लेता है और मुनिवरों! देखो, ये ऊर्जा लेकर के सबको ऊर्जित बनाने लगता है। मानव इससे ऊर्जा पाता हुआ और विज्ञानवेत्ता इसी की ऊर्जा में नाना प्रकार के विज्ञान को, विज्ञान को जानने वाला और विज्ञानवेत्ता बन जाता है। मुनिवरों! देखो, ऋषि ने कहा, याज्ञवल्क्य ने क्या ये प्रकाश के देने वाला, प्रकाश का द्युतक है।

चन्द्रमा से प्रकाशमान

मुनिवरों! देखो, राजा जनक और उनकी पत्नी, दोनों ने उपस्थित हो करके कहा, हे प्रभु! जब हम आचार्य कुल में बाल्यकाल में अध्ययन करते थे ये विचार तो आचार्य हमें प्रगट करते रहते थे। हे प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं, जब ये सूर्य नहीं होता तो कौन प्रकाश के देने वाला

है, कौन प्रकाश का द्युतक है? उन्होंने कहा, हे राजन्! जब ये सूर्य नहीं होता तो हम चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाश लेना प्रारम्भ कर देते हैं। ये चन्द्रमा प्रकाश का द्युतक है। मानो ये प्रकाश देता रहता है, ये अमृत देता रहता है। हे ऋषिवर! हे राजन्! मानम् ब्रव्हे कृतम्, मानो देखो, ये जो चन्द्रमा है ये प्रकाश का द्युतक है। और यहीं तक प्रकाश नहीं देता कि माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। उस नाड़ी का समन्वय माता की पुरातत्व नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत्व नाम की नाड़ी का समन्वय मुनिवरों! देखो, माता की लोरियों से होता है। और लोरियों से पञ्चम नाड़ी बन करके चलती है तो उसका माता की नाभि से समन्वय होता है। और बालक की नाभि और माता की नाभि का दोनों का समन्वय होता है। बेटा! नस नाड़ियों के द्वारा, वो चन्द्रमा उसे अमृत प्रदान कर रहा है। वाह रे प्रभु, तू कितना विज्ञानवेत्ता है।

मुनिवरों! वह विज्ञान में ही उसने जगत को रचा है और नस नाड़ियों के द्वारा ही अमृत को पान करा रहा है। मेरे प्यारे! देखो कृषक की भूमि उपज हो गयी है और वह चन्द्रमा जब उसमें रस प्रदान कर देता है तो कृषक बड़ा प्रसन्न होता है। मेरे प्यारे! उसका समन्वय देखो, समुद्रों से होता है। जब ये अपनी षोडश कलाओं से युक्त हो जाता है चन्द्रमा, तो ये मुनिवरों! देखो, अमृताम्, षोडश कलाओं वाला चन्द्रमा, समुद्र में वृत (नृत) करता है और समुद्रों से अमृत को लेता है। ये जल को अपने में सिञ्चन कर लेता है उसको अमृत बना करके बेटा! उसकी वृष्टि कर देता है। मेरे प्यारे! प्रभु का कहाँ-कहाँ ये तारतम्य है बेटा! विज्ञानमयी है। इसके ऊपर हमारे यहाँ परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण और अनुसन्धान होता रहा है।

आओ मुनिवरों! देखो, विचार क्या, वेद के ऋषि ने कहा, आचार्य ने कहा, हे राजन्! मानो जब ये चन्द्रमा, जब ये सूर्य नहीं होता तो हम

चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशमान हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने कहा, अमृताम् देवाः उसके प्रशन्नम् ब्रहे।

तारामण्डलों का प्रकाश

उसके जिज्ञासा में आते हुए देखो देवी ने, राजा ने कहा, यजमान ने, क्या हे भगवन् हम जानना चाहते हैं जब ये चन्द्रमा नहीं होता तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा हे राजन्नम् ब्रहे, जब ये मानो चन्द्रमा नहीं होता तो हम तारामण्डलों के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये तारामण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश आता है हम अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेते हैं और प्रकाश में रत्त हो जाते हैं। मानो देखो धीमे-धीमे प्रकाश से, मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषियों को, अमृताम्, देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे राजन्! जब देखो मैं विज्ञान के गर्भ में प्रवेश करता हूँ तो मुझे ये जगत अनन्तता में दृष्टिपात आता है। हे राजन्! हे यजमान! मैं यह उद्गीत गाना चाहता हूँ कि तुम्हें मैं माला को समर्पित करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा, क्या तुम्हें यह प्रतीत है क्या ये तारामण्डलों की एक माला बनी हुई है और ऐसी विचित्र माला है जिसको धारण करते हुए मानव क्या अपने में बड़ा आश्चर्य में परणित तप रहे।

मेरे प्यारे! देखो, ये माला कैसे है। जिस भी काल में बेटा! वैज्ञानिकजन अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान हो करके और विज्ञान के ऊपर जब उन्होंने अपना अन्वेषण किया है, अपना विचार किया है तो उसी समय ये पृथ्वी के गुरुत्व परमाणुओं के ऊपर अन्वेषण होता रहा है। ये पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान हुआ। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है, शिकामकेतु उद्दालक मुनि का विद्यालय। जिस विद्यालय में मुनिवरों! देखो, तीस लाख पृथ्वियों के ऊपर अन्वेषण हुआ। तीस लाख पृथ्वियों की माला बनाई गई, और तीस लाख पृथ्वियों को बेटा! शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ विज्ञानशाला में इसको जानने का प्रयास

किया गया। मेरे प्यारे! देखो, अमृताम् ब्रह्मेः, ऋषि शान्त नहीं रहा करते हैं। **ऋषि मानो कहीं समाधि के द्वारा, कहीं मानो अणु परमाणुओं के द्वारा, वे मुनिवरों! देखो, प्रकृतिवाद और देखो मन और प्राण के वाद में लगे रहते हैं।**

मुनिवरों! देखो, वो शान्ति को प्राप्त नहीं हुए। उन्होंने विचारा क्या ये जो तीस लाख पृथ्वियाँ हमने जानी हैं, ये माला कौन बना रहा है? तो मुनिवरों! देखो विचार, मेरे पुत्रों! देखो तीस लाख पृथ्वियों की माला बनी। वह माला सूर्य ने अपने में धारण कर लई। ये सूर्य इतना विशाल मण्डल है जिसमें तीस लाख पृथ्वियाँ, बेटा! समाहित हो जाती हैं। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि शान्त न रहा। ऋषि ने कहा, क्या एक सहस्त्र सूर्यों की माला बनी, मेरे पुत्रों! जिसको बृहस्पति अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र वृस्पतियों की माला बनी जिसको मुनिवरों! देखो आरूणी मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र आरूणी मण्डलों की माला बनी मेरे पुत्रों! इसको ध्रुव मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र ध्रुव मण्डलों की माला बनी। मेरे पुत्रों! देखो, जिसको स्वाति नक्षत्र अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र स्वाति नक्षत्रों की माला बनी जिसको पुष्प नक्षत्र अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्रों की माला बनी मेरे पुत्रों! देखो, इसको मूल नक्षत्र अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र देखो जब मूल नक्षत्रों की माला बनी उसको मुनिवरों! देखो, अचङ्ग मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र अचङ्ग मण्डलों की माला बनी, जिसको मुनिवरों! देखो रेणुकृतिका मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र रेणुकृतिका मण्डलों की माला बनी, जिसको बेटा! देखो, सौमभूग मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र सौमभूग माला बनी, जिसको मेरे पुत्रों! देखो इसको गन्धर्व मण्डल अपने में धारण कर लेता है। मेरे पुत्रों देखो! ये प्रभु का कैसा अनुपम जगत है, कैसी रचना है।

मुनिवरों! देखो, इतने मण्डलों का एक सौरमण्डल बन जाता है। जितने मण्डलों का एक सौरमण्डल बना, मेरे पुत्रों! देखो, सौरभ ब्रव्हे। मुनिवरों! विचार आता रहता है **ऋषियों ने अनुसन्धान किया और समाधि प्राण के द्वारा उसको अन्वेषण में लाए।** मुनिवरों! देखो, इतने मण्डलों का एक सौरमण्डल बना। और मुनिवरों! देखो, एक अरब छयानवे करोड़ उन्तीस लाख उन्नचासवे हजार पाँच सौ इक्सठ, मुनिवरों! देखो, ऐसे-ऐसे सौर-मण्डलों की एक आकाशगङ्गा बनी। मेरे पुत्रों! देखो, एक आकाशगङ्गा जब बन गयी तो ऋषि उसे निहारने लगे। प्रभु की विचित्रता, बेटा! उसमें दृष्टिपात करते रहे। मेरे पुत्रों! देखो, एकम् ब्रह्मा एक अरब पैंसठ करोड़ उन्नहत्तर लाख उन्नचासवे हजार पाँच सौ इक्यावन के लगभग, मुनिवरों! देखो, इतनी आकाशगङ्गा की एक निहारिका बनी। मेरे पुत्रों! देखो, पौने दो अरब के लगभग निहारिकाओं की एक अवन्तिका बन गयी। बेटा! देखो, ऋषि यहाँ आ करके मौन हो गया! और उसने कहा कि ये प्रभु का ये जो सौरमण्डल है ये बड़ा अनन्तमयी है। मानो देखो, यहाँ आ करके ऋषि अपने में मौन हो जाते हैं। प्राण को अपने में समेट करके अपने में मुनिवरों! देखो विचार-विनिमय प्रारम्भ करने लगते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह मैंने तुम्हें मालाओं को धारण कराया है। ये प्रभु का कैसा अनुपम ये सौरमण्डल है बेटा! जिस सौरमण्डल के ऊपर ऋषि-मुनि बड़ा अन्वेषण करते हैं। आज मैं तुम्हें परिचय दे रहा हूँ, व्याख्या देने नहीं आया हूँ। व्याख्याता नहीं हूँ केवल परिचय देना है। जो आज का हमारा वेद मन्त्र कह रहा है। मेरे प्यारे! देखो, ये वाक्य मैंने तुम्हें कई काल में, पुरातन काल में भी प्रगट किए हैं। आज भी स्मरण आ रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अमृताम्, वे जब मौन हो गए।

अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार की विवेचना की तो माता रम्भेश्वरी और राजा जनक ने नतमस्तक होकर के कहा हे प्रभु!

आप तो बड़े प्रखर हैं, मेधावी हैं। हे प्रभु! परन्तु ये मेधावी तो जब हम बाल्यकाल में आचार्य मेधावी के द्वारा अध्ययन कर रहे थे, उस समय उन्होंने मुझे ये वर्णन कराया था। प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं, जब ये सौरमण्डल नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्युतक बना रहता है, कौन प्रकाश को देने वाला है? राजा जनक के वाक्यों को पान करते हुए ऋषि ने कहा, हे राजन्! जब ये सौरमण्डल नहीं होता, जब ये मानो देखो, ये तारामण्डल नहीं होते, तो उस समय हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये अग्नि हमें प्रकाश का द्युतक है। ये अग्नि ही हमें प्रकाश के देने वाली है। ये अन्धकार छाया हुआ है, परन्तु उस अन्धकार में मेरे प्यारे! देखो, मेरी प्यारी माता गृह में प्रकाश करती हुई अपने गृह को प्रकाशित कर लेती है, अग्नि के द्वारा प्रकाशित कर लेती है अपने क्रियाकलापों को। उसमें प्रारम्भ करके उसके क्रियाकलाप उसमें सम्पन्न हो जाते हैं। तो विचार आता है कि अग्नि ही मानो देखो, अग्नम् ब्रव्हा, अग्नि एक नहीं बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार की अग्नियों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है।

मुनिवरों! देखो, अग्नि हमारे यहाँ, मैं व्याख्या नहीं करने आया हूँ। जब मैं अग्नि की विवेचना देने लगता हूँ तो एक-एक माह चाहिए बेटा! अग्नि ही विवेचना करने के लिए। आज तो मैं तुम्हें परिचय देने आया हूँ। मुनिवरों! देखो, अग्नम् ब्रह्मा। हमारे आचार्यों ने बेटा! जहाँ चार प्रकार की अग्नि बेटा! आध्यात्मिकवेत्ताओं ने स्वीकार की। परन्तु जब यही अग्नि आयुर्वेदा आचार्यों के गृह में पहुँची, उन्होंने बेटा! पिचासी प्रकार की अग्नियों का चयन किया। जब यही अग्नि वैज्ञानिकों के गृह में प्रवेश हुई तो बेटा! अरबों खरबों प्रकार की अग्नियों का चयन हो गया। मेरे प्यारे! देखो, वह अग्नि, अणु और परमाणु के रूप में परणित हो जाती है। यही अग्नि है बेटा! जो देखो, माता के गर्भस्थल में बन करके रहती है। यही अग्नि है बेटा! जो देखो द्यौ में रहती है। यही अग्नि है जो शब्द को ले करके मुनिवरों! देखो, द्यौ में प्रवेश करा देती है। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि

अपने में अणु और परमाणु बन करके रहती है। एक-एक श्वास के रूप में बेटा! देखो, अग्नि का चयन होता रहता है। अणु और परमाणु के रूप में मेरे प्यारे! आत्म रूप में प्रवेश होता रहता है। तो विचार आता रहता है बेटा! अग्नि अपने में बड़ी विचित्र है। मैं विचार देने आया हूँ। परिचय देने के लिए आया हूँ, बेटा! परिचय है ये। अग्नि का परिचय क्या, ब्रह्माग्नि बन करके रहती है। जिससे ब्रह्मवेत्ता, उस अग्नि को मापदण्ड से अपना बखान करता रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, यही अग्नि, विज्ञानवेत्ताओं के यहाँ यन्त्रों का निर्माण होता रहता है। और वे यन्त्र मुनिवरों! सूर्य की किरणों के साथ मानो देखो भ्रमण करता रहता है। कोई यन्त्र सूर्य की परिक्रमा करता है, कोई यन्त्र ध्रुव की परिक्रमा करता है और परिक्रमा करता हुआ बेटा! देखो, लोक लोकान्तरों में हमें भ्रमण करा देता है। तो विचार आता रहता है, मेरे पुत्रों! देखो ये बड़ा विचित्र अग्नम् ब्रह्मा, ये अग्नि है। मेरे प्यारे! देखो अग्नि हमें तपायमान करती है। अग्नि ही उष्ण दे करके, शब्द बन करके बेटा! द्यौ में प्रवेश करता है। मेरे पुत्रों! देखो ये अग्नि गृहपत्य में देखो, गृह की अग्नि को प्रदीप्त करता रहता है। यही अग्नि है जो ब्रह्मचर्य को अग्नि रूप में प्रवेश करा के बेटा! ब्रह्मवर्चोसी, ब्रह्मवेत्ता बना देता है। तो मेरे प्यारे! देखो अग्नि के बड़े विशुद्ध रूप हैं। और विचित्रता में मुनिवरों! देखो अग्नि का बखान करते हुए, ऋषि ने कहा, हे अग्नम् ब्रह्मा! हे राजन्! हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं।

शब्द का प्रकाश

देखो, ऋषि से, यजमान से न रहा गया। मेरे पुत्रों! देखो राजा जनक ने कहा, देवी अक्रतम् दोनों उपस्थित होकर के बोले, हे प्रभु! अग्नि की विवेचना तो हमारे आचार्य विद्यालयों में प्रारम्भ करते रहे हैं और हम ये जानना चाहते हैं जब ये अग्नि नहीं होती तो कौन प्रकाश

का द्युतक है, कौन प्रकाश के देने वाला है? उस समय मुनिवरों! देखो, ऋषि ने कहा, हे राजन्! जब ये अग्नि नहीं होती तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ध्वनि पर ध्वनियाँ हो रही हैं। रात्रि छायी हुई है। अन्धकार में मानव विराजमान है और वे ध्वनियों में ध्वनियाँ आ रही हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वे ध्वनि कैसी विचित्र है। वह रात्रि अन्धकार में देखो, ध्वनि के परमाणु परस्पर संघर्ष करते रहते हैं। उसकी धीमी-धीमी ध्वनि आ रही है। मेरे पुत्रों! देखो वह प्रकाश में रत्त कराने वाला है। एक मानव देखो, मार्ग में गति कर रहा है और वह गमन करता हुआ मुनिवरों! देखो मार्ग से कुमार्ग में चला जाता है। और कुमार्ग में, अन्धकार में, भयङ्कर वन में कहता है, अरे! है कोई मार्ग चेताने वाला। उस समय जो मानव मार्ग में स्थिर है, वह कहता है, आ जाओ, मैं मार्ग में स्थिर हूँ। मुनिवरों! देखो, वह जो मानव अन्धकार में था वह उसी प्रकाश से, उसी शब्द के प्रकाश से मुनिवरों! देखो, वह मार्ग का सुपथक रहा, वह मार्ग का पथिक बन जाता है। शब्द को ग्रहण कर लेता है।

मेरे प्यारे! देखो वह शब्द का प्रकाश है। शब्द ही मुनिवरों! देखो एक अज्ञानी को प्रकाश में ला देता है। वह अन्धकार में अज्ञानी है। ज्ञान को प्रकाश में लाता है। मेरे प्यारे! देखो ध्वनियाँ आ रही हैं। रात्रि में परमाणु संघर्ष कर रहे हैं। और देखो ध्यानावस्थित वाला योगेश्वर ध्वनियों में ध्वनित हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो पाण्डित्व जब इस विद्या का अध्ययन कर लेता है, वह अन्धकार से प्रकाश में चला जाता है। वो पाण्डित्व बन जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, ध्वनि पे ध्वनि आ रही है, ये शब्द है, शब्दम् ब्रह्मा, बेटा! इसी ध्वनि को अपने में मुनिवरों! देखो, उद्गीत गाता रहता है। और उद्गीत गाता हुआ मुनिवरों! देखो ध्वनि में और ध्वनित होता है। तो मुनिवरों! देखो वह अपनी अनहद मानो देखो, मस्तिष्क में एक अनहद स्वर ध्वनियाँ हो रही हैं उसे ग्रहण करता है। ग्रहण करता हुआ जब उसको जब कार्यरूप देता है, मेरे प्यारे! देखो उन सूत्रों को ग्रहण कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो जिसको व्याकरण के

रूप में परणित कर देता है। विचार आता रहता है अरे! ध्वनि पर ध्वनि आ रही है उसी के प्रकाश में मानव प्रकाशित हो रहा है। प्रकाश को प्राप्त कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता रहता है, हे मानव! तू ध्वनि को अपने में ध्वनित होता चल। और इस ध्वनि को तुम बाह्य, बाह्य जगत की ध्वनि को तुम आन्तरिक देखो अनहद मस्तिष्क में उसे ग्रहण करने लगो, उस ध्वनि को अपने में उसे श्रवण करने लगो। मेरे प्यारे! देखो वह ध्वनि पर ध्वनि आती हुई, जो मुनिवरों! देखो ब्रह्मरन्ध्र में एक मानो देखो ध्वनियाँ हो रही हैं उस ध्वनि को **अनहद** कहते हैं। और उस अनहद की ध्वनि को जो ग्रहण करता है, बेटा! वह ब्रह्मवेत्ता बन करके और उसी से व्याकरण धारा को अपने में लाना प्रारम्भ कर देता है। आज मैं बेटा! बहुत दूरी नहीं जाना चाहता हूँ। ये तो विचारों का बन है। आज मैं तुम्हें केवल परिचय ही तो देने आया हूँ व्याख्या देने नहीं आया हूँ।

आत्मा का प्रकाश

विचार क्या, जब ऋषि ने इस प्रकार बेटा! अपने विचार दिए तो उस समय दोनों उपस्थित हो करके बोले, हे प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं, भगवन् आपने जो हमें इस प्रकार का उद्गम ब्रहे, देखो शब्द प्रकाश कहा है। हम यह जानना चाहते हैं भगवन्, जब ये शब्द भी नहीं होता, तो प्रकाश का द्युतक कौन बना हुआ है? मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने कहा, हे राजन्, हे यजमान, मानो देखो जब ये ब्रह्मणम् ब्रहा क्रतम् लोकाम् हिरण्य गर्भाः। जब मानो देखो यह ध्वनि नहीं होती, शब्द नहीं होता, तो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशवान होते हैं। मानो देखो, आत्मा जब तक इस मानव शरीर में वास कर रहा है जब तक मुनिवरों! देखो ध्वनि पर ध्वनि आ रही है। सर्वत्र विज्ञान को वो अपने में समेटे हुए है। सर्वत्र व्याकरण को अपने में समेटे हुए है। अपने में ही वो सिमट रहा है। तो आत्मा के ही प्रकाश से प्रकाशमान बना, प्रकाशमान हो रहा है। हे

राजन्! हे आग्रहे! हे अक्रतम् ब्रह्मा! हे यजमान! देखो मैं इतना ही जानता रहता हूँ कि आत्मा का प्रकाश, आत्मा में ही मानो देखो अपने में वो दृष्टिपात करता रहता है।

हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। जब ये आत्मा शरीर में होता है तब तक मानव जागरूक रहता है। क्रियाकलाप करता रहता है, अध्ययन करता रहता है। परमात्मा की सृष्टि को निहारता रहता है और अग्नि में प्रवेश कर जाता है। लोक-लोकान्तरों की माला बना लेता है परन्तु देखो सूर्य प्रत्यक्ष हो जाता है।

हे राजन्! जब ये आत्मा निकल जाता है शरीर से–नेत्र गोलक में बने हुए शून्य में ही तो सूर्य का प्रकाश शान्त हो जाता है। मानो देखो, चन्द्रमा का प्रकाश नहीं होता, अग्नि अपने में नहीं हो पाती। परन्तु देखो, आत्मा के न रहने से, सर्वत्र ये जो प्रकृतिवाद है शून्यता को प्राप्त हो जाता है और जब तक यह शरीर में विद्यमान है, ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो देखो इसके समीप बना रहता है। मेरे प्यारे! कैसा अद्भुत उस प्रभु का ये मानो देखो निर्माण है। ये आत्मा का कैसा प्रकाश है।

मुनिवरों! देखो देव ब्रहा, जितना भी विज्ञान है, वो सब विज्ञानता को मुनिवरों! शान्त हो जाता है। परन्तु वेद का ऋषि ये कहता है, हे राजन्! देखो, **जहाँ ये प्रकृतिवाद और ये भौतिक विज्ञान जहाँ समाप्त होता है, वहाँ से आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हो जाता है।** ये आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हुआ। मुनिवरों! देखो, आत्म ब्रह्मा आत्म देवाः। ये आत्मा को जानने वाले, **आत्मवेत्ता** जो पुरुष होते हैं, ये प्रकृति को नीची कर लेते हैं और अपने में ही प्रकाशवान हो जाते हैं। मानो जो आत्मवेत्ता होते हैं उन लोक लोकान्तरों की माला बना करके अपने में धारण कर लेते हैं। मानो देखो इसी प्रकार वे अपने प्रभु को निहारते रहते हैं। सृष्टि को निहारते रहते हैं और प्रभु के राष्ट्र में चले जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो प्रभु का राष्ट्र वह है, जहाँ अन्धकार नहीं होता, रात्रि

नहीं होती, आलस्य नहीं होता। मेरे प्यारे! देखो जहाँ रात्रि नहीं है वहाँ अज्ञान नहीं, जहाँ ज्ञान है, वहाँ प्रकाश है, वह प्रभु का राष्ट्र है। और जहाँ देखो, ज्ञान है वहाँ रात्रि नहीं हैं और जहाँ रात्रि नहीं है, वहाँ आलस्य प्रमाद भी नहीं है। और जहाँ आलस्य प्रमाद नहीं है, बेटा! वहाँ मृत्यु भी नहीं हुआ करती। मेरे पुत्रों! देखो, मृत्यु से मानव पार हो जाता है। मृत्यु अज्ञान को कहते हैं। अज्ञान को त्यागो, प्रकाश में आ जाओ तो मेरे प्यारे! जीवन महान् बनेगा।

ये है बेटा! आज का वाक्। मैं विशेष चर्चा नहीं दूँगा। एक-एक वाक्य पर यदि मैं चर्चा करने लगूँगा तो बेटा! इस संसार की सर्वत्र विज्ञान की धाराएँ इसमें लुप्त हो जाती हैं। आओ मेरे प्यारे! तो विचार आता रहता है, वेद के ऋषि ने कहा, राजन् **हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान हैं।** आत्मा जब तक शरीर में रहता है जब तक ये पञ्चाग्नि जागरूक, और यह पञ्चाग्नि अपने में अग्न्याधान करती रहती है। ये पाँचो इन्द्रियाँ, ज्ञान इन्द्रियाँ, ज्ञान के साथ हो जाती हैं, तो ये आत्मा का प्रकाश है। इसी प्रकाश को मानव अग्रगणीमय बनाता हुआ प्रकाश में रत्त हो जाए। मेरे प्यारे! देखो ब्रव्हे पद्म शब्दः अग्नि और तारामण्डल और मुनिवरों! देखो चन्द्रमा और सूर्य, ये सर्वत्र मानो देखो आत्मा के रहते हुए प्रकाशमान हैं। ये आत्म, आत्मतत्त्व जब शरीर से निकल जाता है उसके पश्चात् ये शून्यता को प्राप्त हो जाता है। ये है बेटा! आज का वाक्।

मेरे प्यारे! देखो राजा जनक ने और उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने, ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और ये कहा, प्रभु आपको धन्य है। आपने हमारे अन्धकार, अन्धकार से दूरी कर दिया। हे प्रभु! आपको धन्य है। हे देव, आप तो महानता की आभा आपमें विराजमान रहती है। आप बुद्धिमान हैं, तपस्वी हैं। जिज्ञासामभूतम्, आप देखो, जिज्ञासा की पूर्णता को जानते हैं। हे प्रभु अमृतम् ब्रह्मा। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने

याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के चरणों को स्पर्श करते हुए, उन्होंने धन्य-धन्य कह करके उस आसन को त्याग दिया।

मेरे प्यारे! विचार आता रहता है, क्या जो अन्धकारमयी मानव को प्रकाश में बनाने वाला है, वह पुरोहित कहलाता है। वह परविद्या को देता है। वह आचार्य कहलाता है।

ये है बेटा! आज का वाक्। **आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय** ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक्। **आज का वाक्य उच्चारण करना ये, क्या हम पूर्णता को जानते हुए आत्मा के समीप चल जायें। आत्मा में आत्मा का दर्शन करते रहें।** ये चर्चाएँ बेटा! अब सम्पन्न होने जा रही हैं, समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

वेदपाठ .....

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्।
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो।

दिनाँक : 8 जनवरी, 1990
समय : रात्रि 8 बजे
स्थान : श्री निरंकार सिंह त्यागी
ग्राम महादों, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. यज्ञ वेदी हमारी परम्परा है, हमारी सँस्कृति, हमारा धर्म और ज्ञान है।
2. संसार में वास्तविक यज्ञ वेदी तो यज्ञ करना है।
3. हे ब्रह्मा! तेरा गहना क्या है? आज तेरा गहना यज्ञ वेदी है, आज तेरा गहना वेद है, आज तेरा गहना प्रकाश है।
4. आत्मज्ञानी संसार में वह होता है जिसको संसार का पूर्ण ज्ञान होता है।
5. आज वेदों को अपनाना है। वेदरूपी प्रकाश से हमारा वास्तव में कल्याण होगा।
6. आज वेद का एक-एक अक्षर पुकार रहा है कि हे मानव! तू यज्ञ को अपना।
7. प्रत्येक देव कन्या को उस यज्ञवेदी पर आ जाना है जिस पर आने से मानव का कल्याण होता है।
8. हे माता! तू कौन-सी अन्धकाररूपी गुफा में जा पहुँची है जहाँ तू अपनी ज्ञानरूपी अग्नि शान्त कर बैठी है।
9. जो सङ्कल्पवादी होता है वह संसार में ऊँचा होता है।
10. आज हम इङ्गला, पिङ्गला और सुषुम्ना नाम की नाड़ियों को जाग्रत करने वाले बनें।
11. हमारे शरीर में इन्द्रियाँ कैलाश हैं इनका पति आत्मा हैं।
12. यज्ञोपवीत वह पदार्थ है जो हमें परमात्मा के मार्ग में ले जाने के लिए प्रेरित करता है।
13. यज्ञोपवीत का सम्बन्ध आत्मा से होता हुआ उस परमात्मा से होता है जो हमारा कल्याण करता है।
14. लिङ्ग नाम ज्ञान का है हमारा द्रव्य भी लिङ्ग है।
15. उदारता और ब्रह्मचर्यता से वीरता व तेज आता है।
16. स्वर्ग वह होता है जहाँ कोई कष्ट नहीं होता।
17. अहिंसा परमोधर्म का पालन करके ज्ञान के वेद के प्रकाश में जाना है।
18. हमारे जो काम, क्रोध, मोह और लोभ शत्रु है इनको नष्ट करना है।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

सुश्री दीक्षा एवम् ज्योतिका

श्रीमति मनु वर्मा पत्नी श्री नरेश वर्मा जी निवासी औरंगजेब लेन, नई दिल्ली ने अपनी सुपुत्रियों सुश्री दीक्षा, सुश्री ज्योतिका के जन्म दिवस क्रमशः 10 दिसम्बर और 11 दिसम्बर के शुभ आगमन पर गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 5100 रुपये का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को ऊर्ध्वागति प्रदान करने के लिए अत्यन्त उदारता एवम् नम्र भाव से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रगट करती है।

श्री वर्मा जी अपने नाना जी व माता-पिता के सानिध्य में वैदिक शिक्षा बाल्यपन से ही ग्रहण करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज से संलग्न हो गए और उनके ब्रह्मतत्त्व में यागों का आयोजन अपने गृह पर सम्पन्न कराते हुए यागों की प्रति वर्ष शृंखला आयोजित कराने में लग गए और प्रवचनों का अध्ययन करते हुए अपने परिवार को निरन्तर ऊर्ध्वा गति प्रदान करने में संलग्न रहते हुए लाक्षागृह बरनावा व वैदिक अनुसन्धान समिति को भी बल प्रदान करने में अपना सहयोग बनाए हुए है।

श्री वर्मा जी की बड़ी पुत्री सुश्री दीक्षा ने भारत से इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद अमेरिका से स्नातकोत्तर में डिग्री प्राप्त की और अभी न्यूयार्क अमेरिका में एक विख्यात संस्था में वरिष्ठ पद पर कार्यरत हैं। छोटी पुत्री सुश्री ज्योतिका ने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर में डिग्री प्राप्त करने के उपरान्त दिल्ली इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के अन्तर्गत एक कॉलेज में अर्थशास्त्र की असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।

वैदिकता से सम्पन्न परिवार को उनकी दोनों सुपुत्रियों के जन्म दिवस पर समिति हृदय से बारम्बार शुभकामना प्रगट करती है और परमपिता परमात्मा से समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी उन्नति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

वियोग

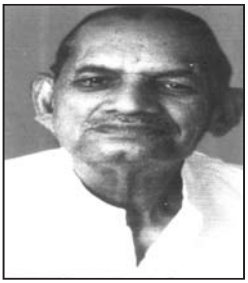

श्री हरीराम गुप्ता जी

परमपिता परमात्मा की अद्भुत सृष्टि का चक्र निरन्तर गतिशील बना हुआ है जिसमें कि प्राणी मात्र का आवागमन अपने प्रारब्ध के अनुसार सक्रिय है। उसी प्रभु की व्यवस्था के क्रम में पूज्यपाद गुरुदेव के अन्यय एवम् श्रद्धालु शिष्य श्री हरीराम गुप्ता जी निवासी जयदेव पार्क, नई दिल्ली 31 दिसम्बर 2019 को इस मृत्युलोक से, हम सबके बीच से चले गए। श्री गुप्ता जी बहुत ही सरल हृदय व उदार प्रवृत्ति से अपने जीवन में परम्परागतों के वैदिक तथा धार्मिक कार्यों में निरन्तर संलग्न रहे। पूज्यपाद गुरुदेव के सानिध्य में आने के उपरान्त अपने जीवन को याग से समृद्ध करने के लिए गुरुदेव के ब्रह्मतत्त्व में अनेक बार यागों का आयोजन अपने गृह पर आयोजित किया और आशीर्वाद पाते हुए उनके प्रवचनों और दैनिक याग से अपने परिवार को निरन्तर सम्पन्न बनाया लाक्षागृह बरनावा व वैदिक अनुसन्धान समिति, नई दिल्ली को निरन्तर अपना सहयोग प्रदान करते हुए ऊर्ध्वा में ले जाने के लिए दिल्ली समिति के प्रचारमन्त्री व कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में अपना योगदान निरन्तर समय-समय पर प्रदान करते रहें।

इसी शृंखला को ऊर्ध्वा गति प्रदान करने में उन्होंने जन समुदाय के अपार सहयोग से करोल बाग व राजा गार्डन, पंजाबी बाग नई दिल्ली में श्रीमान श्री दीक्षित रंगनाथ सेलुकर जी के कर कमलों द्वारा सोम यागों का बहुत ही भव्य आयोजन कराया जो कि सभी याज्ञिक महानुभावों के हृदय में एक चिर काल तक स्मृति के रूप में स्मरण रहेगा।

गुप्ता जी की छत्रछाया के गमन करने पर परिवार को जो क्षति पहुँची है परमपिता परमात्मा उसको सहन करने की शक्ति प्रदान करें ऐसी प्रार्थना करते हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क दिनाँक 1 जनवरी 2019 से 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. होगा, जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   ए-59, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली – स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आज का हमारा वेद का पाठ, यह उच्चारण करता चला जा रहा था। हमारे यहाँ उस परमपिता परमात्मा की महिमा का जहाँ गुणगान गाया जाता है, तो वास्तव में जब उसको तत्त्व-तत्त्व से विचारने लगते हैं तो हमें यह प्रतीत होने लगता है कि यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड वसुन्धरा का स्वरूप माना गया है। क्योंकि वसुन्धरा महामना प्रभु को भी कहते हैं, जिसके गर्भस्थल से यह सर्वत्र जगत विराजमान हो रहा है, जिसकी प्रक्रियाओं से यह पृथ्वी क्रियामान हो रही है, सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसी के आश्रित भ्रमण कर रहा है। आज हम उस परमपिता परमात्मा को भी वसुन्धरा के रूपों में परणित किया करते हैं और उसका गुणगान गाते हैं गुणों का अनुवाद करते हुए कहा करते हैं कि वह जो प्रभु है जो संसार का रचयिता है, जो क्रियात्मक क्रिया में ला रहा है परन्तु वही जगत में व्याप रहा है उसी की महान् ज्योति से हम सर्वत्र ब्रह्माण्ड में, सर्वत्र प्राणी, प्राणी मात्र उसी की ज्योति से व्याप रहा है, उसी के आँगन में रमण कर रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 48 : अंक : 568
जनवरी 2020

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-1-2020
Published on 5th day of the same month